Q. मनोविज्ञान की विधियाँ (Methods of Psychology):

वुन्ट के समान टिचेनर ने भी अन्तर्निरीक्षण तथा प्रयोग (Experimentation) को मनोविज्ञान की मुख्य विधि माना है। सचमुच में टिचेनर के लिए अन्तर्निरीक्षण विधि वुन्ट की तुलना में अधिक औपचारिक विधि है। उन्होंने यह स्पष्ट किया कि अन्तर्निरीक्षण की विधि उत्तम ढंग से प्रशिक्षित प्रेक्षकों द्वारा ही वैज्ञानिक ढंग से सम्पन्न किया जा सकता है। टिचेनर ने अन्तर्निरीक्षण को प्रभावी बनाने के लिए कई महत्वपूर्ण नियमों (Rules) का प्रतिपादन किया जिनमें से कुछ प्रमुख निम्नांकित हैं।

(i) प्रेक्षक की प्रकृति निष्पक्ष एवं अपूर्वाग्रही होनी चाहिए।

(ii) प्रेक्षक को अपने ध्यान पर पूर्णत: नियंत्रण होना चाहिए तथा वह उसके इधर उधर भटकने पर रोक लगाने में सक्षम हो।

(iii) प्रेक्षक का मन तथा शरीर थकान द्वारा प्रभावित नहीं हो, दूसरे शब्दों में उसमें ताजापन हो।

(iv) प्रेक्षक को अन्तर्निरीक्षण के प्रति एक धनात्मक मनोवृत्ति होनी चाहिए। दूसरे शब्दों में उसे इस प्रक्रिया में अभिरुचि होनी चाहिए।

टिचेनर का मत है कि इन नियमों का पालन करते हुए एक प्रशिक्षित प्रेक्षक प्रेक्षण करते समय उत्तेजक वस्तु या घटना पर ध्यान केन्द्रित न करके उससे उत्पन्न चेतन अनुभूति पर ध्यान केन्द्रित करता है। ऐसे प्रेक्षक अनुभूति के प्रत्यक्षण तत्व के प्रेक्षण में अभिरुचि दिखलाते हैं न कि उन तत्वों के आधार पर किए गए किसी तरह के अनुमान पर, वुन्ट के समान टिचेनर भी अन्तर्निरीक्षण को प्रयोग का एक महत्वपूर्ण भाग मानते थे। उनका विचार था, कि यही प्रयोग से मनोविज्ञान का स्वरूप वैज्ञानिक हो पाता है।

II

टिचनर के अनुसार प्रयोग एक ऐसा प्रेक्षण होता है। जिसे दोहराया जा सकता है। जिसमें परिवर्तित किया जा सकता है, तथा जिसे नियंत्रित किया जा सकता है।

अन्तर्निरीक्षण विधि में टिचनर के अनुसार एक महत्वपूर्ण कठिनाई जो उत्पन्न होती है वह है। उद्दीपक त्रुटि की जिसे अन्तर्निरीक्षक किसी घटना या वस्तु का प्रेक्षण करते समय उस वस्तु या घटना पर अधिक ध्यान देता है। न कि उससे उत्पन्न चेतन अनुभूति पर तो इस तरह की त्रुटि को टिचनर ने उद्दीपक त्रुटि कहा है। जैसे यदि कोई प्रेक्षक या अन्तर्निरीक्षक टेबुल देखकर टेबुल कहता है। परन्तु यदि टेबुल से उत्पन्न चेतन अनुभूति के बारे में कुछ नहीं कहता है, तब उद्दीपक त्रुटि का उदाहरण होगा, और यदि टेबुल देखकर वह यह कहता है कि टेबुल काफी ही सुन्दर है। जिसे खरीदना चाहिए, तो यह उद्दीपक त्रुटि का उदाहरण नहीं होगा, क्योंकि वह टेबुल से उत्पन्न चेतन अनुभूति का वर्णन कर रहा है। यही कारण है। कि टिचनर इस बात पर बल देता है कि प्रेक्षक या अन्तर्निरीक्षक को प्रशिक्षित होना आवश्यक है।

चयन के नियम - (Principles of selection)

टिचनर ने इस समस्या पर ध्यान देने की कोशिश किया है कि आखिर क्यों कुछ उद्दीपकों का चेतन में चयन कर लेता है। वे इस समस्या का समाधान ध्यान के संप्रत्यय (concept) में किया है। उनका मत है कि ध्यान में कुछ चेतन तत्व इस तरह से सुस्पष्ट हो जाते हैं कि वे चेतन के केन्द्र बन जाते हैं।

(111)

इस तरह से ध्यान के सम्प्रत्यय को टिचेनर ने संवेदी स्पष्टता के तुल्य माना है। क्योंकि ध्यान के तीन सामान्य अवस्थाओं का वर्णन किया है। अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान, ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान तथा व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान।

अनैच्छिक या प्राथमिक ध्यान में संवेदी अनुभूति के कुछ विशेषताएँ जैसे गुण तथा तीव्रता के आधार पर व्यक्ति किसी वस्तु या घटना की ओर ध्यान देते पाया जाता है। अचानक आवाज होने या रोशनी के तीव्र चमक होने पर व्यक्ति का ध्यान उधर बिना इच्छा के ही चला जाता है। यह अनैच्छिक ध्यान का उदाहरण है। ऐच्छिक या द्वितीयक ध्यान से तात्पर्य चेतन तरीके पर किसी निश्चित उद्देश्य के साथ ध्यान केन्द्रित करने से होता है। इसे टिचेनर ने एक कठिन अवस्था बतलाया है। क्योंकि इसमें व्यक्ति को स्पष्टता के उच्चतर स्तर पर ध्यान को केन्द्रित करके रखना पड़ता है। व्युत्पन्न या अभ्यासगत अनैच्छिक ध्यान में व्यक्ति समान परिस्थिति के दोहराये जाने से सहज ध्यान देता है। यहाँ ध्यान देने का आधार कुछ सीखी गयी आदतें होती हैं। टिचेनर ने इन तीनों अवस्थाओं को सतत न कि एक दूसरे से अलग माना है। उसके अनुसार व्यक्ति का मुख्य उद्देश्य अन्तिम अवस्था में पहुँचना होता है। क्योंकि इस अवस्था में कम से कम प्रयास से व्यक्ति का ध्यान चेतन अनुभूति पर केन्द्रित रहता है। Date - 08/04/21

Dr. Pramod Kumar Sahu (Psychology)
V.S.J. College, Rajnagar (Madhubani)

Scanned with CamScanner